PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

व्याप्ति विनिश्चय (न्याय-वैशेषिक मत)

→ वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद ने सर्वप्रथम व्याप्ति ग्रहण की चर्चा की। महर्षि कणाद के अनुसार कार्यकारणभाव, संयोग, समवाय, एकार्थ समवाय तथा विरोध संबंध ही 'व्याप्ति' या 'प्रसिद्धि' ग्रहण के साधन हैं।

परवर्ती काल में व्याप्ति ग्रहण की इन विधियों की आलोचनाएं भी सामने आयी। कहा गया है कि यदि कार्यकारण भाव आदि को ही व्याप्ति ग्रहण का साधन माना जाय तो चन्द्रमा के उदय होने से समुद्र वृद्धि का अनुमान नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि चन्द्रमा के उदय होने तथा समुद्र की वृद्धि में कार्य-कारण भाव आदि उपरोक्त पाँचों संबंधों का अभाव है।

परवर्ती काल में प्रशस्तपाद ने वैशेषिकसूत्र भाष्य पर लिखते हुये 'अन्वय व्यतिरेक' को व्याप्ति ग्रहण का माध्यम बतलाया। प्रशस्तपाद के अनुसार साधन और साध्य (यथा-धूम्र और अग्नि) का नियत साहचर्य तथा साध्य के अभाव में साधन के भी अभाव से व्याप्ति ग्रहण की क्रिया होती है।

→ परवर्तीकाल में नैयायिक उदयन ने अन्वय-व्यतिरेक रूप भूयोदर्शन तथा बार-बार सहचार दर्शन को ही व्याप्ति ग्रहण का माध्यम बतलाया। उदयन के अनुसार यद्यपि जब धूम्र और अग्नि पाकशाला में पहली बार साथ-साथ देखे जाते हैं तब भी दोनों की व्याप्ति गृहीत रहती है किन्तु इस सहचार में शंका उपस्थित हो जाने के कारण बारम्बार अवलोकन द्वारा इस शंका का निराकरण किया जाता है। अतः प्रथम सहचार दर्शन में ही व्याप्ति ग्रहण

से आने के उपरांत भी निगम रूप में व्याप्ति के ग्रहण के लिये भूयोदर्शन (दो वस्तुओं के बार-बार साहचर्य दर्शन) की आवश्यकता होती है।

→ नैयायिक वाचस्पति मिश्र ही अपनी न्यायवार्त्तिक तात्पर्य टीका में उदयन प्रवर्तित व्याप्ति ग्रहण ~~विधि~~ की विधि में तनिक सँशोधन करते हुये लिखा है कि व्याप्ति उपाधिविहीन स्वाभाविक संबंध है। अतः व्याप्ति का ~~निश्चित~~ निश्चित तर्क सहकृत भूयोदर्शन से होता है।

वाचस्पति मिश्र के अनुसार व्याप्ति ग्रहण के लिये भूयोदर्शन के अतिरिक्त दो और तथ्यों की आवश्यकता होती है - (i) उपाधिनिरास या उपाधिविहीनता तथा (ii) तर्क।

~~(i) उपाधि विहीनता~~ दो घटनाओं का संबंध यदि किसी उपाधि पर निर्भर है तो इनसे व्याप्ति ग्रहण में बाधा होती है। अतः दो वस्तुओं के बीच अनौपाधिक निश्चित साहचर्य के आधार पर ही व्याप्ति ग्रहण संभव है।

पुनः दो वस्तुओं के बीच अनौपाधिक निश्चित साहचर्य की स्थापना तर्क के द्वारा संभव है। अतः व्याप्ति की स्थापना के लिये तर्क की भी आवश्यकता है। तर्क व्याप्ति का अनुग्राहक है।

Scanned with CamScanner